IMPACT FACTOR 5.473(SJIF)
UPA NATIONAL E-JOURNAL
Interdisciplinary Peer-Reviewed Indexed Journal
Volume -8 : Issue-1 (February-2022)
ISSN 2455-4375

मुंशी प्रेमचंद की कहानियों में राष्ट्रीय चेतना

डॉ. सी. पी. गुप्ता
सहायक प्राध्यापक (इतिहास)
स्वामी विवेकानंद शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
हरदा–461331, मध्य प्रदेश
Email- chandrapal.gupta@yahoo.com

साहित्य में कहानियां हमेशा ही ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायी सिद्ध हुई हैं और यदि कहानियों को राष्ट्रीय चेतना के जगाने का आधार बनाया जाए तो राष्ट्रीय चेतना को जनचेतना में बदलने में वक्त नहीं लगता। जब राष्ट्रीय चेतना बिजली के करंट की तरह देश के प्रत्येक समाज और नागरिक के अंदर अंतःव्याप्त हो जाती है, तो फिर फौलाद की गुलामी की जंजीरों को भी निर्भय और निडरता से तिनके की भांति तोड़ा जा सकता है।

किसी भी युग का साहित्य उस युग के समाज का दर्पण होता है और साहित्यकार उस समाज से अनुभूति लेकर के उसे अभिव्यक्ति देता है । मुंशी प्रेमचंद्र जिस युग में थे, वह युग भारत में दोहरी गुलामी का युग था। एक तरफ ब्रिटिश भारतीय प्रांत थे तो दूसरी तरफ देशी रियासतें। आम नागरिकों का जीवन इन्हीं दोहरी गुलामी में पिस्ता रहता था। उस युग में अभिव्यक्ति की आजादी नहीं थी और अभिव्यक्ति की मांग करने वालों को लोहे की मूंठ वाली लाठी से पीटा जाता था। यह सच है कि कोई भी साहित्यकार अथवा पत्रकार उस समय खुलकर ब्रिटिश सरकार का विरोध नहीं कर सकता था किंतु दूसरा सच यह भी है कि साहित्यकार क्रूर, निकम्मी और तत्कालीन ब्रिटिश सरकार के अत्याचारों को सहन भी नहीं कर सकता था। ऐसी परिस्थिति में इन साहित्यकारों और पत्रकारों ने कहानियों और किस्सों के माध्यम से ब्रिटिश सरकार की नीतियों के विरुद्ध राष्ट्रवाद की नदी को न केवल प्रवाहित किया बल्कि उसे दिशा, तीव्रता और विशालता प्रदान की।

भारत में हिन्दी कहानियों का विकास औपनिवेशिक शासन के उत्पीड़नकारी प्रतिक्रिया और राष्ट्रीय चेतना की जाग्रति के साथ हुआ। इस वैचारिक आंदोलन के युग ने अनेक कहानीकारों के साथ मुंशी प्रेमचंद जैसे महान कहानीकार को भी जन्म दिया। सन 1910 के दशक में प्रकाशित मुंशी प्रेमचंद की कहानियों में राष्ट्रीय चेतना स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। प्रेमचंद्र ने राष्ट्रीय चेतना को जगाने में अपनी कहानियों का भरपूर उपयोग किया है। कहानियों से प्रभावित होकर समाज के हाशिए पर ढकेले गए समाज ने राष्ट्रीय आंदोलन में अपनी सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित की।

गांधी जी द्वारा चलाए गए असहयोग आंदोलन के कार्यक्रम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार और स्वदेशी अपनाओ का कार्यक्रम था। विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार के कार्यक्रम को मुंशी प्रेमचंद जी ने अपनी कहानी **चकमा**[प] में बहुत ही सुंदर तरीके से वर्णित किया है। प्रेमचंद जी ने विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार को आम नागरिकों के द्वारा किस प्रकार से स्वीकार किया जा रहा था और यह स्वीकारोक्ति केवल समाज के विशेष वर्गों तक सीमित नहीं रह गई थी, बल्कि समाज का व्यापारी, किसान, जमीदार, मजदूर, विद्यार्थी, सरकारी कर्मचारी और वकील सभी स्वीकार कर रहे थे। जिस प्रकार से चकमा कहानी में सेठ चंदूमल, जो कि ब्रिटिश हुकूमत का वफादार व्यापारी था अनेक सुविधाएं प्राप्त कर रहा था, उसने भी राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत होकर न केवल अंग्रेजों का साथ छोड़ दिया बल्कि कांग्रेस की नीतियों का समर्थक बनकर उनकी पिकेटिंग का समर्थन करके अंग्रेजों को चकमा देकर सरकारी गवाह बनने से इंकार कर दिया। इस कहानी का प्रभाव समाज के सभी वर्गों पर पड़ा और ब्रिटिश सरकार का व्यापार दिन प्रतिदिन कम होता चला गया।

कहानी **सत्याग्रह**[iii] के माध्यम से सन 1930 में गांधी जी द्वारा चलाए गए सविनय अवज्ञा आंदोलन और नमक सत्याग्रह में देश के हर तबके और क्षेत्र ने सहभागिता की। प्रेमचंद्र ने स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन के प्रति लोगों में जो जुनून और समर्पण भाव था, उसे सत्याग्रह कहानी के माध्यम से अभिव्यक्ति दी और साथ ही लोगों को अनुप्राणित करने की कोशिश भी की है। उस समय गांधीजी के आह्वान पर देश का प्रत्येक व्यक्ति विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार द्वारा ब्रिटिश सरकार को झुकाना चाहता था।

जब हिज एक्सीलेंसी वाइसराय बनारस आ रहे थे तब सभी व्यापारियों, उद्योगपतियों कर्मचारियों, विद्यार्थियों और वकीलों ने यह निश्चय किया था कि वाइसराय का बहिष्कार बाजार और दुकानें बंद करके किया जाएगा। इस सब चीजों से अंग्रेज सरकार भी बेखबर नहीं थी। उसने लोगों को दुकानें खोलने के लिए तरह–तरह के प्रयत्न किए, डराया, धमकाया और ललचाया किंतु इन सबसे जनव्यापी राष्ट्रीय चेतना नहीं डिगी।

बनारस में राय हरनंदन साहब, राजा लालचंद और खाँ बहादुर, मौलवी महमूद अली तो कर्मचारियों से भी ज्यादा बेचैन थे। मैजिस्ट्रेट के साथ–साथ और अकेले में भी बड़ी–बड़ी कोशिशें करके अंग्रेजों से वफादारी का प्रमाण पत्र प्राप्त करने के लिए जी जान से मेहनत कर रहे थे । अंग्रेजपरस्त कर्मचारी, अधिकारी और राजे रजवाड़े स्थानीय दूकानदारों को हिदायत देते, समझाते, अनुनय–विनय करते, आँखें दिखाते, इक्के–बग्गीवालों को धमकाते, मजदूरों की खुशामद करते पर यह सभी प्रयास बेकार सिद्ध हो रहे थे। यहां तक की सब्जी बेचने वाली कुँजड़िन ने भी जान की परवाह किए बिना सब्जी की दुकान न खोलने पर अड़ गई थी।

राष्ट्रीय चेतना का बुखार इस तरीके से जन–जन में सिर चढ़कर बोल रहा था कि इन अधिकारियों को इस बात की चिंता थी कि यदि पंडाल बनाने वाले मजदूर, बढ़ई, लोहार आदि ने काम नहीं किया तो अनर्थ भी हो जाएगा और ब्रिटिश राष्ट्र भक्तों की तौहीन भी हो जाएगी।

सत्याग्रह कहानी के अनुसार तब अंग्रेजों और उनके वफादार भारतीय राजाओं और नवाबों ने एक षड्यंत्र रचा। उन्होंने पंडित मोटेराम शास्त्री से यह प्रवचन कराया कि अंग्रेज आपके सभी प्रकार के हितैषी हैं। यदि आपने उनका विरोध किया तो आपको कुछ भी हासिल नहीं होगा। यदि आप लोगों ने वायसराय का बहिष्कार किया, दुकानें नहीं खोलीं तो मैं अन्न–जल त्यागकर अपने प्राण दे दूंगा। एक ब्राम्हण के सकारण प्राण त्यागने का आप सभी–व्यापारियों, कर्मचारियों और मजदूरों को ब्रह्म हत्या का पाप लगेगा। इससे कुछ समय के लिए संपूर्ण बनारस सहम गया और इससे बचने के लिए दुकानें खोलने की सोचने लगा, किंतु तभी कांग्रेस ने पंडित मोटेराम शास्त्री जी को, जो कि खाने के लिए बड़े लालायित रहते थे उन्हें कुछ मिठाईयां खिलाकर, अंग्रेजों और उनके पिट्ठुओं के पाखंड को आम नागरिकों के बीच उजागर कर दिया। इस कहानी से यह पता चलता है कि अंग्रेज और वफादार किस सीमा तक जाकर भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को कुचलने के लिए प्रयास करते थे, किंतु राष्ट्रीय चेतना को, किसी भी दमनकारी सरकार के लिए रोक पाना संभव नहीं होता।

मुंशी प्रेमचंद्र ने गांधीजी के सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान एक और कहानी **समर यात्रा**[iiii](1930) का लेखन जिस तरीके से किया है, उससे वास्तव में भारत के स्वाधीनता संग्राम के इतिहास को भारत के जन आंदोलन के इतिहास में बदलने वाली जीवंत तस्वीर नजर आती है। इसमें गांव के सभी बूढ़े–बच्चे, युवा, स्त्री–पुरुष, जमींदार–किसान, लंबरदार, प्रधान, अमीर–गरीब गांधीजी के नमक सत्याग्रह और **सविनय अवज्ञा आंदोलन** को पूरे अनुशासन और धैर्य के साथ एक धर्म युद्ध की तरह लड़ते हुए वर्णित किए गए हैं।

गांव के चौधरी कोदई के द्वार पर जिस तरीके से गांव वालों के द्वारा अंग्रेजों के बिना भय के, सत्याग्रहियों के जत्थे के भोजन और स्वागत के लिए सामग्री–आटा, दाल दूध, तरकारी, दही मिट्टी के बर्तन इत्यादि का संग्रहण किया गया है, उससे यह स्पष्ट होता है कि भारत के ग्रामीण समाज ने भी अहिंसा और अनुशासन के साथ राष्ट्रीय आंदोलन को अपना नैतिक और भौतिक समर्थन अपनी क्षमता से

भी अधिक देने का मन बना लिया था और साथ ही ग्रामीणों के मन में पराधीनता के जुए को उतारकर निडरता और निर्भयता का जनसैलाब पैदा कर दिया था , अब उन्हें स्वाधीन होने से कोई दमनकारी ताकत अधिक समय तक रोक नहीं सकती थी।

राष्ट्रीय आंदोलन ऐसे ही राष्ट्रीय जन चेतना का जीता जागता साक्षात प्रमाण है, यद्यपि इतिहास में कुछ ही नायकों का चित्रण किया गया है किंतु वास्तव में कहानी समर यात्रा के अनुसार 75 वर्षीय नोहरी जैसी अनगिनत भारतीय ग्रामीण महिलाएं अपनी क्षमता और सामर्थ्य से अधिक सहयोग और समर्थन राष्ट्रीय आंदोलन को प्रदान कर रही थीं।

गांधी जी ने नमक सत्याग्रह प्रारंभ करते हुए और अपनी गिरफ्तारी से पहले बड़े ही जोशीले शब्दों के साथ देश से आह्वान किया था कि विदेशी कपड़ों और शराब के बहिष्कार द्वारा ही स्वराज्य प्राप्त किया जा सकता है और इन दोनों कामों में महिलाओं की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण हो सकती है। गांधी जी ने एक बार कहा भी था कि महिलाओं को कमजोर कहना उनका अपमान है। यह पुरुषों का महिलाओं के प्रति अन्याय है।[पअ]

कहानी **समर यात्रा**[अ] के माध्यम से भी प्रेमचंद्र जी ने चित्रित किया है कि नोहरी अपनी उम्र और परिस्थितियों को दरकिनार करके सत्याग्रहियों के जत्थे में शामिल होने के लिए व्याकुल है उसे खाकी वर्दी का न तो डर है और न चिंता। वह किसी युवा से कम उत्साही नहीं है। नोहरी का सत्याग्रहियों के जत्थे में शामिल होने का सामान्य आशय यह है कि जब वह 75 वर्ष की होकर के राष्ट्र सेवा के लिए समर्पित है, तो फिर अन्य महिलाएं और युवा ऐसा क्यों नहीं कर सकते। नोहरी के जोश को देखकर गांव के अनेकों युवा, सत्याग्रह आंदोलन में शामिल हो जाते हैं। उसने सिद्ध कर दिया कि वो कोमल जरूर है परंतु कमजोर नही ।

प्रेमचंद्र की इस कहानी से एक और आदर्श राष्ट्रीय चेतना के दर्शन होते हैं, गांधी जी द्वारा 1930 के इस आंदोलन में नमक कानून को तोड़ने के लिए आह्वान किया गया था, किंतु जिन स्थानों में नमक कानून तोड़ने के लिए समुद्र या खारा पानी नहीं था, वहां पर **कर नहीं** देने का आंदोलन चलाया गया था। विशेषकर चौकीदारी कर क्योंकि चौकीदार गांव की रखवाली करते थे और सरकार के लिए खुफिया गिरि करते थे वे जमीदारों के चमचे हुआ करते थे। परिणामस्वरूप गांव के किसान इनसे सख्त नफरत करते थे, और उन्होंने इनका सामजिक बहिष्कार तक कर दिया था। परिणामस्वरूप जागीरदार और चौकीदार राष्ट्रीय आंदोलन की मुख्य धारा में शामिल होने के लिए आगे आने लगे ।

समर यात्रा कहानी में भूतपूर्व चौधरी परिवार की नोहरी और वर्तमान चौधरी कोदई सत्याग्रहियों के जत्थे का स्वागत करने के लिए बेचैन थे। चौधरी कोदई तो हंसते हुए जेल भी गया और अपने बच्चों को सत्याग्रह में शामिल होने के लिए प्रेरित करता गया। उसके ह्रदय से अब अंग्रेजों का न तो डर था, और न कोई पद का लालच। इसी प्रकार चौकीदार घूरे जिस तरीके से सत्याग्रहियों के जत्थे में शामिल होता है, उससे मालूम पड़ता है कि अब वास्तव में अंग्रेजों का सहयोग करने के लिए गांव की सबसे छोटी इकाई का चौकीदार भी तैयार नहीं है और वह भी अंग्रेजों की कुत्सित नीतियों से असंतुष्ट होकर सत्याग्रहियों के साथ मिलकर देश की आजादी के लिए कुछ करना चाहता है।

"पत्नी से पति[अप] (1930) एक ऐसे भारतीय हिंदू दंपति– मिस्टर सेठ और गोदावरी की कहानी है, जिसमें मिस्टर सेठ पाश्चात्य संस्कृति से ओतप्रोत रंग और मूल से भारतीय किंतु पहनावे और बोलचाल में पूरा काला अंग्रेज ऊपर से राजभक्त और वफादार सरकारी मुलाजिम। जबकि दूसरी तरफ पत्नी गोदावरी पति के विपरीत राष्ट्रभक्त और भारतीय संस्कृति और वेशभूषा की कट्टर समर्थक। गोदावरी को जहां खादी से लगाव है, वहीं मिस्टर सेठ को नफरत। गांधी जी का सत्याग्रह आंदोलन जारी है और पूरे देश में विदेशी वस्त्रों की होली जलायी जा रही है। पर पत्नी चाह कर भी विदेशी वस्तुओं के होली दहन कार्यक्रम और कांग्रेश के जलसों में हिस्सा नहीं ले सकती। अंततः पति की इच्छा के विपरीत वह देशभक्ति को पतिभक्ति के ऊपर रखकर, पति की इच्छा के विरुद्ध कांग्रेस के कार्यक्रम में भाग लेकर दो सौ रुपए की मोटी रकम

चंदे के लिए दान करती है, जिससे पति नाराज होता है और इस प्रकार असंख्य महिलाएं भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय भाग लेकर के एक **मिसाल** पेश करती हैं। हम सभी जानते हैं कि 1930 के सविनय अवज्ञा आंदोलन में भारत की असंख्य महिलाओं ने घर की चहारदीवारी को लांघकर आजादी की लड़ाई में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर अपना योगदान दिया है। वास्तव में मुंशी प्रेमचंद की कहानियां तत्कालीन भारतीय नारियों की भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय सहभागिता की अभिव्यक्ति भी हैं और सक्रिय सहभागिता के लिए प्रेरणा स्रोत भी।

1930 के दशक में मुंशी प्रेमचंद जी ने राष्ट्रीय चेतना को अभिव्यक्त करने वाली 11 कहानियों की रचना की थी, उन्हीं में से एक थी **होली का उपहार**[अपप] (1931) इस कहानी में कहानीकार ने अपनी अनुभूति को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। उस युग में देश की आजादी के खातिर एक तरफ बेचैनी और तड़प थी तो दूसरी तरफ विलायती कपड़ों और पाश्चात्य संस्कृति की तरफ युवाओं का आकर्षण। होली के उपहार कहानी में ऐसे ही एक द्वंद्व का वर्णन मुंशी प्रेमचंद जी के द्वारा किया गया है। जहां मैकूलाल के कहने पर अमरकान्त अपनी नवविवाहिता पत्नी को खुश करने के लिए उसके मायके जाकर विलायती साड़ी का तोहफा देना चाहता है । जबकि अमरकांत और मैकूलाल दोनों यह भली–भांति जानते हैं कि इस समय भारत में गांधी जी द्वारा अंग्रेजों के विरुद्ध स्वदेशी अपनाओ और विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का आंदोलन एक जन आंदोलन बन चुका है और विदेशी वस्तुओं की दुकानों के बाहर शांतिपूर्ण धरना–प्रदर्शन सत्याग्रहियों द्वारा किया जा रहा है। अमरकांत चोरी–छिपे हाशिम की दुकान से विलायती साड़ी खरीदने के लिए पहुंच गया, जबकि दूसरी ओर विदेशी वस्त्रों की दुकानों में पिकेटिंग या धरना धरने वाले, प्रत्येक उस दुकान पर पैनी नजर रखे हुए थे, जो हाशिम जैसे विलायती कपड़ों के दुकानदार थे। सत्याग्रहियों ने अमरकांत को पकड़ लिया और उससे उसकी साड़ी छीन ली, तभी एक समर्पित महिला सुखदा देवी आ गई, उसने सत्याग्रहियों से कहकर अमरकांत की साड़ी तो दिला दी, किंतु उसने विलायती मोह पर जो कटाक्ष किए, उससे अमरकांत की आंखें खुल गईं।

सुखदा देवी ने कहा की औरतें तो मर्दों को सही रास्ते पर लाने और नियंत्रण करने का कार्य करती हैं, फिर कोई औरत विदेशी कपड़ों की चाहत कैसे रख सकती है। सुखदा देवी के कटाक्ष ने अमरकांत के अंदर विदेशी कपड़ों की चाहत को छलनी कर दिया और उसने उसी समय माचिस की डिबिया निकाली और एक तीली से विलायती साड़ी को जलाकर होली मनाली। अब अमरकांत ने न केवल विदेशी वस्त्रों का परित्याग किया, बल्कि विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार और आंदोलन के लिए हंसते हुए होली के दिन पुलिस के सामने निडर होकर गिरफ्तार हुआ और हंसते–हंसते जेल चला गया। सुखदा ने भी उसे फूलों की माला पहनाकर हंसते हुए विदा किया। भारत माता के लिए इससे बड़ा होली का उपहार और क्या हो सकता था । सुखदा देवी जैसी सैकड़ों गृहणियों ने भटके हुए पुरुषों को राष्ट्र सेवा के लिए प्रेरित किया।

वास्तव में स्वदेशी स्वराज प्राप्त करने का एक सशक्त माध्यम था। अंग्रेजों की ताकत का राज उनके प्रशासन में भारतीयों द्वारा सहयोग करना और उनके व्यापार को बढ़ाने के लिए उनकी विलायती वस्तुओं का खरीदना था और इन कहानियों के माध्यम से स्वदेशी को अपनाकर अंग्रेजों की ताकत को कमजोर करने का जन–जागरण अपने चरम पर पहुंच चुका था।

कहानीकार मुंशी प्रेमचंद की कहानियों की विषय वस्तु ग्रामीण परिवेश रहा है और ग्रामीण समाज जिसकी संख्या सदैव से ही भारत में तीन चौथाई के आस–पास रही है, यदि वह किसी व्यवस्था के विरुद्ध खड़ा हो जाए, तो स्थापित प्रशासन को बचाए रख पाना मुश्किल कार्य था। यही कारण है 1919 के बाद से भारत में उठे राष्ट्रीय चेतना के तूफान ने ब्रिटिश प्रशासन को 1947 में पूरी तरह नेस्त–नाबूद कर दिया।

संदर्भ ग्रंथ :

- मुंशी प्रेमचंद मानसरोवर भाग–6 कहानी चकमा,सरस्वती प्रेस बनारस सं. 1947 पृष्ठ संख्या 206–212
- मुंशी प्रेमचंद मानसरोवर भाग–3 कहानी सत्याग्रह,सरस्वती प्रेस बनारस सं. 1947 पृष्ठ संख्या 275–89
- मुंशी प्रेमचंद मानसरोवर भाग–7 कहानी समरयात्रा(1930),सरस्वती प्रेस बनारस सं. 1947पृष्ठ संख्या 73–88
- प्रोफेसर बिपिन चंद्र, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, संस्करण नवम1995 पृष्ठ संख्या 215
- मुंशी प्रेमचंद मानसरोवर भाग–7 कहानी समरयात्रा(1930),सरस्वती प्रेस बनारस सं. 1947पृष्ठ संख्या 73–88
- संजय खत्री मुंशी प्रेमचंद मानसरोवर भाग–7 कहानी पत्नी से पति (1930), हिंदी कोश, यूनिकोडसंस्करण 2012
- मुंशी प्रेमचंद कहानी होली का उपहार (1931), सॉंई ईपब्लिकेशन सं. 2014 पृष्ठ संख्या 1–9